ॐ आन्जनेय नमः

सप्तमो अध्यायः

श्रीकृष्ण अर्जुन संवाद

'ज्ञान-विज्ञान योग'

अध्याय

दोहा- जिसे जानकर जीव के मिट जाते भवरोग।
ज्ञान और विज्ञान का, अर्जुन समझो योग॥

मेरे आश्रित मत्परायण योग जब हो जायेगा।
पार्थ मुझको जानकर संशय रहित हो जायेगा।। 01

ज्ञान या विज्ञान क्या है, तत्व का क्या सार है?
मुझसे सुन विस्तार से, क्या सृष्टि का विस्तार है? 02

मुझको पाने का नहीं सबको यहां उल्लास है।
लक्ष में कोई खोलता बस एक भव के पाश है।। 03

आठ भेदों के मेरे इस सृष्टि में आकार है।
जीव लक्षित भेद सुन मन, बुद्धि और अहंकार है।। 04

भूमि, जल, आकाश मेरे रूप के ही स्नायु है।
ये सभी जड़वृत्ति मेरी अग्नि एवं वायु है।। 05

जड़ प्रकृति जानों इन्हें, अपरा हैं ये अभिव्यक्ति से।
सृष्टि धारित अवतरित मेरी परा की शक्ति से।। 06

दोहा- उद्भव स्थिति नाश सब, इनके ही आधीन।
कारक कर्ता मैं स्वयं, रहता हूँ स्वाधीन॥

हूँ प्रभा शशि, भानु की मैं शब्द हूँ आकाश में।
पुरुष, पौरुष, वेद ओंकार रस जल रास में।। 07

तपसी का तप, तेज पावक में व जीवन जीव का सम्बन्ध हूँ।
शस्य श्यामल इस धरा की मैं ही पावन गंध हूँ।। 08

धर्म सम्मत, शास्त्र सम्मत, तेज बल और काम हूँ।
मैं सनातन बीज, रज, तम और सात्विक नाम हूँ।। 09

त्रिगुण मय अद्‌भुत मेरी माया ये अपरम्पार है।
मम शरण, मम नाम जपकर, जीव होता पार है।। 10

मुझमें निष्ठा या प्रतिष्ठा मेरा बल विश्वास हो।
ऐसा ज्ञानी भक्त अति प्रिय है जो मेरा दास हो।। 11

मेरी इच्छा के बिना पत्ता यहां हिलता नहीं।
जपता इस विश्वास से जो जन्म फिर मिलता नहीं।। 12

कामनायें वासनायें भोग पाने के लिए।
जपते हैं दुर्बुद्धि सब ऐश्वर्य पाने के लिये।। 13

अस्तु जो जिस भाव से जिस देव का पारण करे।
मुझसे श्रद्धा-भक्ति पा, उस देव को धारण करे।। 14

मेरी इच्छा से सहज पाता वो ऐसा योग है।
सिद्ध कर उस देव को, पाता वो इच्छित भोग है।। 15

किन्तु फल का भोग कर आभाव ही आभाव है।
मुझको पाता वह निरन्तर जिसका मुझमें भाव है।। 16

पार्थ यह संसार इच्छा द्वेष का ही द्वन्द्व है।
इससे मोहित जीव फिर, होता नहीं स्वच्छन्द है।। 17

अस्तु बस निष्काम होकर मोह उद्धारण करे।
इस तरह निष्पाप हो मम धाम को धारण करे।। 18

जीव पर निर्भर, यहां दो मार्ग हैं, दो यंत्र हैं।
भोग या उद्धार दोनों के बनाये मंत्र हैं।। 19

दोहा- धन्य, धन्य, ध्वनि, ध्वनित हो, गूंज उठा आकाश।
गिरजा और गिरजेश के, मुख छाया उल्लास।।

इति श्रीकृष्ण अर्जुन संवाद ज्ञान विज्ञान योग
सप्तम अध्याय समाप्त।